International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-04-2022, Accepted: 26-04-2022, Published: 12-05-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 8-10

समकालीन हिंदी कहानी में नारी

सुषमा नरांजे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, एस.एस.गर्ल्स कॉलेज, गोंदिया, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
समकालीन कहानी में निश्चय ही नए विषयों की पकड़ है। यथार्थ के अनछुए आयाम हैं। महानगरों के जीवन के विचित्र छायारंग हैं। समकालीन कहानी में एक ओर परंपरा है तो दूसरी ओर आधुनिकता भी है। कहानी में समकालीनता की अवधारणा पर डॉ.पुष्पपाल सिंह अपना विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, ''1965 ई. को समस्त नवलेखन को एक नयी प्रस्थान भूमि माना जा सकता है, हिंदी में 'समकालीन कहानी' के रूप में परिवर्तन का यह महत्त्वपूर्ण मोड़ है'। समकालीन कहानी ने उच्चवर्ग की नारी के यथार्थ को भी देखा है, भौतिकता की चकाचौंध में सुखी दिखाई पड़ती है। उसकी व्यथा आम नारी से नितांत भिन्न है। आम नारी जीवन की आम जरूरतों के लिए भी संघर्ष करती है। जीवन भर संघर्ष करती है, जीती है और संघर्ष करती है। नियम, कायदे और कानून इसी के लिए हैं। इसके जन्म पर शिक्षित माता–पिता आज भी प्रसन्न नहीं होते. पुत्र की कामना ही करते हैं। समकालीन कहानी ने संबंधों की तलाश भी की है। उनके वे तेवर भी देखे हैं जो इंसान की भूख और हवस को व्यक्त करते हैं। उन्हें देखने–परखने की दृष्टी भी दी है। इन कहानियों की दुनिया न तो काल्पनिक है और न कृत्रिम। वह सहज, स्वाभाविक, गतिशील और मानवीय है। कुल मिलाकर समकालीन हिंदी कहानियों में नए समाज की वैचारिक आधारशीला तैयार करने की दिशा में अत्यंत जरूरी कदम है और साथ ही भारत की आधी आबादी के सच तक पहुँच कर अपने विशिष्ट संवेदनात्मक धरातल पर पहचान बनाने की ओर अग्रसर है।

मूल शब्दः समकालीनता, स्वतंत्रता बोध, व्यावहारिक धरातल, मृत्यु बोध, कटु यथाथ

प्रस्तावना
प्रख्यात कथाकार मैक्सिम गोर्की का कथन है – ''साहित्यकार अपने देश और अपने वर्ग की अनुभूति, उसका कान, आँख, और अपने युग की आवज़ होता है।'' प्रेमचंद ने भी लगभग यही विचार व्यक्त किये थे – ''जो दलित हैं, पीड़ित हैं, वंचित हैं, चाहे वह व्यक्ति हो या समूह, उसकी हिमायत या वकालत करना उसका फ़र्ज है।'' समकालीन कहानी इन्हीं कथनों को सार्थक करती दिखाई देती है। समकालीन कहानी ने युग के रीति रिवाजों और साहित्यिक अभिरूचियों को भी प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही प्रकृति के बाह्रय रम्य रूप, अप्राकृतिक तत्वों के प्रति रूझान, करूणा और संवेदना भी उसमे जिन्हें बिम्ब, प्रतीक संकेत, तथा व्यंजना द्वारा चित्रित किया गया है। समकालीन कहानी में निश्चय ही नए विषयों की पकड़ है, यथार्थ के अनछुए आयाम हैं, महानगरों के जीवन के विचित्र छायारंग हैं। समकालीन कहानी में एक ओर परंपरा है तो दूसरी ओर आधुनिकता भी है। परंपरा की रंगत बिलकुल कभी भी धुल नहीं पाती है। परंपरा किसी देश की संस्कृति होती है। उसे रूढ़, जड़ व्यर्थ कहना सरल है, परन्तु बदलना इतना आसान नहीं है। कहानी में समकालीनता की अवधारणा पर डॉ.पुष्पपाल सिंह अपना विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, ''1965 ई. को समस्त नवलेखन को एक नयी प्रस्थान भूमि माना जा सकता है, हिंदी में 'समकालीन कहानी' के रूप में परिवर्तन का यह महत्त्वपूर्ण मोड़ है।'' नारी व्यथा की गाथा यद्यपि अत्यंत पुरानी है, परंतु पुरानी होने पर भी नई है। नारी आज आगे बढी है इसमें संदेह नहीं है, परंतु उसकी व्यथा की कथाएँ आज भी अनंत हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात अनेक क्रांतिकारी, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन देश में हुए। उच्च वर्ग की नारी आगे बढी है, प्रगति के अनेक कीर्तिमान उसने स्थापित किये हैं। परंतु सामान्य नारी आज भी दलित, पीड़ित, शोषित और उपेक्षित है। समाज का अधिकांश भाग यही नारी है। समकालीन कहानी ने उच्चवर्ग की नारी के यथार्थ को भी देखा हे, भौतिकता की चकाचौंध में सुखी दिखाई पड़ती है। उसकी व्यथा आम नारी से नितांत भिन्न है। आम नारी जीवन की आम जरूरतों के लिए भी संघर्ष करती है। जीवन भर संघर्ष करती है, जीती है और संघर्ष करती है। नियम, कायदे और क़ानून इसी के लिए हैं। इसके जन्म पर शिक्षित माता–पिता आज भी प्रसन्न नहीं होते. पुत्र की कामना ही करते हैं। जन्म–पूर्व लिंग परिक्षण में ही नारी को समाप्त कर दिया जाता है। विज्ञान की प्रगति का यह और नया नतीजा है कि जिसने नारी के महत्त्व को और अधिक समाप्त कर दिया है। समाज, सत्ता, सरकार, महिलात्रआयोग और नारीवादी उसके अधिकारों और अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हैं, परंतु दूसरी और संसार में आने के पूर्व ही महाविनाश। नारी हमेशा से त्रस्त रही। प्रत्येक वर्ग ने उसे गुलाम से अधिक कुछ नहीं समझा। हर एक ने उसकी परिस्थितियों का शोषण ही किया। इस 'अनजान दासी' और 'अभ्यस्त बंदिनी' की मुक्ति के प्रयत्न किये गए। नारी में जागृति की भावना उत्पन्न करने के दृष्टिकोण से विचार किया गया। परंपरा व अन्य सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव नज़र आता है। नारी और पुरूष के संबंधों में नए दृष्टिकोण से विचार किया गया। परंपरा से भिन्न प्रकार से सोचना प्रारंभ हुआ। विवाह, सेक्स, प्रेम सब पर खुलकर विचार करना प्रारंभ हुआ। नारी को दासता के स्तर से समानता के स्तर तक पहुंचाने के प्रयत्न प्रारंभ हुए। नारियों में उसकी दारूण स्थिती के चित्रण महादेवी वर्मा, चंद्रकीरण सौनरेक्सा ने किये हैं। कहीं–कहीं विद्रोह के स्वर भी हैं। नारी स्वयं अपने कैशोर्य आकर्षण का विश्लेषण करने लगी है। उसके औचित्य–अनौचित्य के प्रति वह जागरूक है। इनके पहरावे, प्रदर्शन पर समाज इनके प्रति क्या सोचता है – वह जानती

है। इतना ही नहीं नारी रास्ता निकाल लेती है कि उसका परिवार न टूटे। पति उस पर अविश्वास की दृष्टी न डालने पाए। प्रायः नारी को समझने में भूल की जाती रही। 'सेक्स' रूप से भिन्न और कुछ न मानना संशयात्मक मन का ही परिचायक है जो अधिकार भावना से ग्रसित है। ऐसी कहानियाँ भी लिखी गयीं हैं जिनमें इन विकृतियों को उजागर किया है। विदेशी जीवन के अनुकरण में नारी के सस्ते उच्छृंखलित रूप की तथा विकृत दर्शाने वाली कहानियाँ भी लिखी गयीं हैं। स्त्री लेखिकाओं की समकालीन कहानियों का उदाहरण लें तो मंजुल भगत की 'नागपाश', 'बानो', 'बेबेजी' श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। नमिता सिंह की 'बसंती काकी', 'चन्द्रकान्ता की आवाज', चित्रा मुद्गल की 'भूख', ममता कलिया की 'जांच अभी जारी है', सिम्मी हाशिला की 'ठहरी हुई बूंदे', राजी सेठ की 'बाहरी मन' नमिता सिंह की 'जंगल गाथा' ये सब कहानियाँ समाज में व्याप्त विषमता को व्यंजना सहित उजागर करती हैं। सुधा अरोड़ा की कहानी 'कांच के इधर–उधर' आज के विषम समाज में पनप रहे पर्यावरण के ह्रास को भी सशक्त कथात्मक रूप देती है। समकालीन कथाकारों में सत्यवती मलिक, उषादेवी मिश्र, कमलादेवी चौधरी, होमवती, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, आदि ने नारी की स्थिति दर्शाने वाली कहानियाँ लिखी हैं। चंद्रकीरण सौनरेक्सा की कहानी – 'कमीनों की ज़िन्दगी' बहुचर्चित रही। नारी ने अपने संबंध में कुछ कहने का प्रयत्न किया यह विशिष्ट बात थी। समकालीन कहानी ने संबंधों की तलाश भी की है। उनके वे तेवर भी देखे हैं। जो इंसान की भूख और हवस को व्यक्त करते हैं। उन्हें देखने–परखने की दृष्टी भी दी है। इन कहानियों की दुनिया न तो काल्पनिक है और न कृत्रिम। वह सहज, स्वाभाविक, गतिशील और मानवीय है। भीष्म साहनी की 'बबली' की नायिका बबली युवा मन के सपनों को गरीबी के कारण पालती ही नहीं क्योंकि बाप कुछ करने योग्य नहीं हैं। बेटी से मानों कोई संबंध ही नहीं है। घरों–घरों में बर्तन मांजती है, फिर भी कोई गृहणी उससे खुश नहीं है। हिमांशु जोशी की 'अंतहीन' की वृध्दा नायिका गाँव में अकेली रहती है, कितने साधारण शब्दों में है दर्दनाक चित्र उसकाः ''ऐसी फटी धोती, इतनी काली जरजर देह, बुझी आँखे, अधखिचडी केश, नंगे पाँव, झुर्रियों भरे कपोलों पर आँसू ढकलते, न जाने उस अकेली वृध्दा को यह पाप कब तक ढोना पडेगा।'' समकालीन कहानी एक नए भावबोध की कहानी है। वह न शास्त्रीय है और न रोमानी वह नए मूल्यों का स्थापना–पत्र भी नहीं है। वह आज के जीवन के अनुकूल है। जीवन के दोहरे मूल्य नहीं होने चाहिए। संस्कृती, परंपरा और नैतिकता आज अर्थहीन शब्द हैं। 'वर्तमान' और 'क्षण' को जीने की ललक है। गोविंद मिश्र की 'इन्द्रलोक' की नायिका भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए नैतिकता के पुरातन मूल्यों को नकारती है। युवा होने पर विवाह की समस्या भी एक ऐसी समस्या बन चुकी हे, जिसके लिए माँ–पिता सरकार समाज तथा अनेक सरकारी नियमों के बावजूद विवश नजर आते हैं। नारी का शोषण माता–पिता द्वारा भी होता है। परिवार भी उसे उत्पीडित करता है। खाना–पीना भी पूरा नहीं मिलता। अभिप्राय यह है की नारी का घर और बाहर दोनों ही स्थानों पर शोषण होता है। ''जन्म भर दूसरे की कटौनी–पिसौनी करे, गोबर–सानी करे, फटा–उतारा पहिरे, एक टूका रोटी के लिए दूसरे का लरिका सोचाये।'' निर्मल वर्मा की 'परिंदे' की नायिका लतिका अपना प्रेम कभी भूल नहीं पाती है। समस्त जीवन एकाकी और मौन रह कर ही व्यतीत करती जाती है। यद्यपि एकाकी जीवन की डगर पर उसे अनेक 'इच्छुक' व्यक्ति मिलते हैं। वह मन्नू भंडारी की 'यही सच है' की नायिका दीपा के समान एक प्रेम के अनंतर दूसरे प्रेम के लिए तत्पर नहीं है। दीपा प्रथम प्रेम भुला देती है और दूसरे प्रेम को ही सच मान लेती है। 'दीपा' आधुनिकतम नारी है, जबकी लतिका परंपरावादी है। कहानी विधा अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा जीवन दृष्टिकोण को अच्छी तरह प्रतिबिंबित करती है। जीवन यथार्थ का सही जायजा लेती है, वह निरीह अभिव्यंजना नहीं है। जैनेन्द्र की 'जाह्नवी' सहती है, सोचती है, परंतु व्यायवहारिकता के धरातल पर कुछ कर नहीं पाती है। इसके विपरीत रविन्द्र वर्मा की 'प्रेमःएक अध्याय' की नायिका भावुकता के विपरीत स्वछन्द प्रेम में विश्वास रखती हुई अपने प्रेमी के सहवास में पूर्ण सुखानुभव बिना किसी पाप–बोध के भोगती है। इस रूप में कहानी में भावुकताजन्य मार्मिकता की अपेक्षा व्यावहारिक स्तर पर कहानी ने मनुष्य को प्रतिबिंबित किया गया है। समकालीन कहानियाँ पाठकीय सोच को जगाती है। नौकरशाही का वीभत्स रूप, प्रशासनिक भ्रष्टाचार तथा संबंधों के असली रूप हमारे सामने आये हैं। विशृंखलता है, मूल्यों की टूटन है, नैतिकता का घोर पतन है। आदर्श आधुनिकता की धारा में बह गए हैं, जीवन का कठोर यथार्थ हमारे सामने है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता है। कमलेश्वर की 'मांस का दरिया' नारी के पतित जीवन की घृणित कहानी है। क्या घृणित यथार्थ के चित्रित होने से कहानी गंदी हो जाती है ? नहीं, वह जीवन के उस पक्ष का चित्रण करती है, जिसमें बेसहारा नारी जीने को तन का व्यापार करती है। भीष्म साहनी की वेश्या–जीवन पर 'अभी तो मैं जवान हूँ' कहानी भी इसी कटु यथार्थ को समाये हैं। धीरेन्द्र आस्थाना की 'उस रात की गंध' की एक स्त्री पात्र पति से दुखित होकर एक 'बार' में शराब पिलाने का काम करने लगती है। वह उसे बुरा नहीं समझती है। जीवन जीने को कुछ तो करना ही है। वह इसे साहस के साथ स्वीकारती है। जीवन कितना ही गन्दला, वीभत्स, जटिल और विषाक्तपूर्ण क्यों न हो, कोई मरना नहीं चाहता है। संघर्ष आज के नारी की नियति है इसलिए नारी जुझारू बन गयी है। संत्रास और मृत्युबोध किसी एक नारी की नहीं है। यह संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की भावना है। अकेलापन, अजनबीपन, ऊब, विवशता आज के परिवेश की जीवंत विशेषताएँ हैं। मालती जोशी की 'बोल री कठपुतली' की पत्नी कितनी विवशता भरा जीवन जीती है, इसलिए की परिवार बिखर न जाए। परिवार को बचाते–बचाते वह स्वयं बिखर जाती है। पुरूष सत्तात्मक व्यवस्था में ऐसी अनेक रूढ़ियाँ कायम रही थीं जिसके रहते स्त्री अपने आप को एक व्यक्ति के रूप में भी पहचान पाने में असमर्थ थी। वर्षो के संघर्ष ने स्त्री को आज इस बिंदु पर पहुंचाया है कि आज वह अपनी अस्मिता की पहचान करने लगी है। परिणामतः समकालीन महिला लेखन भी स्वतान्त्रताबोध से गहनता में अनुप्राणित रहा है। कहानी के क्षेत्र में हम देखते हैं कि स्त्री के लिए समाज द्वारा बनाए गए ढाँचे इस स्वतन्त्रता बोध से प्रेरित होकर चरमराने लगे हैं। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता समकालीन हिंदी महिला कहानी लेखन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू रहा है। हिंदी की कहानीकार 'कनकलता' अपने लेखन के अवरूध्द होने को इस प्रकार महसूस करती है जैसे विशालकाय वृक्ष बनने की क्षमता रखने वाले पौधे को बोन्साई में तब्दील कर दिया हो। समाज में लीक से हटकर चलने वालों को अक्सर पागल करार दिया जाता है, किन्तु इसके लिए साहस जरूरी है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'पगला गयी है भागो' सारे अवरोधों को सह–सहकर अंत में सहन की हद तक पहुँच जाती और विरोध में वह चीख उठती है। उसका यह चीखना स्वतंत्रता का घोषणा–पत्र है। व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन करने वाले तत्वों में धर्म आज एक मुख्य भूमिका निभा रहा है। मधु कांकरिया की 'और अंत में ईशु' जैसी कहानियाँ सूचित करती हैं कि धर्म का बाह्य रूप व्यक्ति के जीवन में उन क्षणों में

पहुँचता है जहाँ युक्ति–युक्त चिंतन की सम्भावनाएँ नहीं रह जातीं। साम्प्रदायिकता के प्रत्युत्तर के रूप में स्त्रियों द्वारा लिखी गयीं कहानियाँ काफी संख्या में हैं। साम्प्रदायिक दंगों में सर्वाधिक पीड़ित–प्रताड़ित स्त्री ही रही है। नीलाक्षी सिंह की कहानी 'परिंदे का इंतज़ार सा कुछ', वन्दना राग की 'यूटोपिया', नासिरा शर्मा की 'सबीना के चालीस चोर' आदि कहानियाँ इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं। महिला लेखन के तहत इस विषय पर लिखी गयी अधिकाँश कहानियों में यह विशेषता दिखाई देती है कि मनुष्य की सोच पर एक उन्माद की तरह झाँक कर उसकी स्वतंत्रता का हनन करने वाली इन आसुरी भावों के प्रत्युत्तर के रूप में इन कहानियों में स्त्री पात्र ही आते हैं। धर्म परिवर्तन और अंतर्धार्मिक विवाह के विषय भी इसमें आये हुए हैं जिसमें गीतांजली श्री की 'बेलपत्र' कहानी में स्त्री का स्वतंत्रता बोध सशक्त रूप में दिखाई देता है। धर्म ग्रंथों से अलग रखकर धर्म के नाम पर स्त्री का शोषण होता रहा है इसका प्रतिरोध भी हमें नासिरा शर्मा की कहानी 'खुदा की वापसी' जैसी कहानियों में दिखाई देता है। 'खुदा की वापसी' कहानी मे 'फ़रजाना' अपना हक हासिल करने के लिए धर्म ग्रंथ का पूरी गहराई के साथ अध्ययन करती है और उसी को अपने तर्क के रूप में प्रस्तुत करती है, क्योंकि उसका शोषण धर्म ग्रन्थ का हवाला देकर किया गया। इन तमाम कहानियों में स्वतंत्रता बोध दिखाई देता है। स्वतंत्रता बोध के तहत ही महिला कहानीकारों के जीवन को संवेदना से जोड़कर उसके तरंगायित रूप को पाने कि इच्छा दिखायी देती है। ये कहानियाँ निश्चय ही स्वतंत्रता बोध से अनुप्राणित हैं। कुल मिलाकर समकालीन हिंदी कहानियों में नए समाज की वैचारिक आधारशीला तैयार करने की दिशा में अत्यंत जरूरी कदम है और साथ ही भारत की आधी आबादी के सच तक पहुँच कर अपने विशिष्ट संवेदनात्मक धरातल पर पहचान बनाने की ओर अग्रसर है। यह लेखन स्त्री के सबलीकरण के प्रयासों को पुष्ट करेगा, साथ ही देश–दुनिया को नारी शक्ति के बल पर सक्षम, समृध्द और मानवीयता से पूर्ण करते हुए अपनी सार्थकता सिध्द करेगा और महिलाओं में जीने की हिम्मत भरने की क्षमता रखेगा।

संदर्भ

1. मंजुल भगतः समग्र कथा साहित्य–2 (संपूर्ण कहानियाँ) सं.कमल किशोर गोयनका, प्र.किताबघर प्रकाशन
2. नमिता सिंह, राजा का चौक, वाणी प्रकाशन, 21.। दरियागंज, नई दिल्ली–02
3. नमिता सिंह, जंगल गाथा, वाणी प्रकाशन, 21.। दरियागंज, नई दिल्ली–02
4. बोन्साई–कनकलता, प्रतिभा प्रतिष्ठान, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, पृ.13–29
5. औरत की कहानी–पगला गई है भागो, मैत्रेयी पुष्पा, सं–सुधा अरोड़ा, वसुंधरा प्रकाशन, मुम्बई, पर 136–146
6. औरत की कहानी–सौदा, चित्रा मुद्गल, सं.सुधा अरोड़ा, वसुंधरा प्रकाशन, मुम्बई, पृ.111–118
7. और अंत में ईशु – मधु कांकरिया, किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.9–20
8. परिंदे का इंतज़ार सा कुछ – नीलाक्षी सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड, नई दिल्ली, पृ. 156–198
9. यूटोपिया– वन्दना राग, पहल 89, पृ. 194–210
10. सबीना के चालीस चोर, नासिरा शर्मा, किताब घर, अंसारी रोड, नई दिल्ली, पृ.156–173
11. खुदा की वापसी, नासिरा शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड, नई दिल्ली, पृ. 13–39
12. मैक्सिम गोर्कीः समकालीन हिंदी कहानी, बलराम, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1990, पृ.53
13. रवीन्द्र वर्मा, प्रेम : एक अध्यायः इन्द्रपस्थ भारती (त्रैमासिक), हिंदी अकादमी, दिल्ली, अक्टूबर–दिसंबर 1991.
14. मालती जोशीः समकालीन साहित्य (पत्रिका), जुलाई, 1992, साहित्य अकादमी, दिल्ली.
15. शिवमूर्ति, तिरिया चरित्तर, (केशर–कस्तुरी), पृ. 78, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली